

संपादक : प्रो. चन्दन कुमार

पूर्वोत्तर और हिंदी के प्रेम की कहानी पुरानी है। पन्द्रहवीं शताब्दी में असमिया के एक बहुत प्रसिद्ध कवि हुए श्रीमंत शंकरदेव। श्रीमंत शंकरदेव असम सहित संपूर्ण प्राग्ज्योतिषपुर के समाज, साहित्य और जीवन-बोध के केंद्र में हैं। जब भक्तिकाल चल रहा था तब पूर्वोत्तर के साहित्य में शंकरदेव सक्रिय थे। शंकरदेव की रचनात्मकता ब्रजभाषा के राष्ट्रीय स्वरूप का प्रमाण है। असम में नव वैष्णव आंदोलन ब्रजबुलिरु/ब्रजावली में संभव होता है। ब्रजबुलिध्वजावली ब्रजभाषा, असमिया, मैथिली, संस्कृत और बांग्ला का सम्मिलित रूप है। शंकरदेव ने अपने जीवन में दो बार भारत का भ्रमण किया था। वे अपने साहित्य में कहीं भी असम शब्द का प्रयोग नहीं करते। भारतवर्ष उनकी रचनाधर्मिता के केंद्र में है। यही वह बिंदु है जहाँ से मैं पूर्वोत्तर और हिंदी के संबंध को समझता हूँ।

नवंबर 2017 की बात है। तेजपुर विश्वविद्यालय के अतिथि गृह के एक कमरे में मैं दयाल कृष्ण बोरा से बात कर रहा था। दयाल कृष्ण बोरा असमिया, हिंदी और ब्रजबुलि के विद्वान रहे। अब वे नश्वर शरीर में नहीं हैं। वे एकनाथ भगवती समाज से थे। असम के बरपेटा सत्र से संबंधित थे। सत्र बोले तो मठ। बरपेटा सत्र श्रीमंत शंकरदेव का कर्मस्थल रहा है। खैर, दयाल दा ने एक बात कही 'चौबे जी, ज्योति अगरवाला के खिलाफ अगर आप कुछ बोलेंगे ना तो असम में आग लग जाएगी। ज्योति अगरवाला की बहुत प्रतिष्ठा है यहाँ'।

आपको पता है, कौन है ज्योति प्रसाद अगरवाला? ये सज्जन एक मारवाड़ी व्यापारी थे। असमिया साहित्य में हिंदी के छायावादी युग के समानांतर रचना समय के नायक हैं- ज्योति प्रसाद अगरवाला। इनका जन्मदिन असम में 'शिल्पी दिवस' के रूप में मनाया जाता है और पूरे असम में सार्वजनिक अवकाश रहता है। मैं यह सूचना आपको यह बतलाने के लिए दे रहा हूँ कि पूर्वोत्तर का समाज, संस्कृति, साहित्य और कला की सेवा करने वाले एक मारवाड़ी व्यक्ति को नायक बनाने में सहर्ष तैयार रहा। ज्योति अगरवाला हिंदी सेवी भी थे। यह आजादी के पहले की बात है। तब असम आज का असम नहीं बल्कि पूर्वोत्तर का अधिकांश क्षेत्र असम में ही आता था।

सांस्कृतिक रूप से सात राज्यों का, सिक्किम को मिला दें तो आठ राज्यों का, यह भू-भाग भौगोलिक रूप से कमोबेश एक जैसा है। आज जिसे हम पूर्वोत्तर भारत कहते हैं, वह स्वयं में अनेकानेक भाषाओं-बोलियों, जनजातियों, नृत्य-संगीत, कलाओं, वनस्पतियों, वन्यजीवों, पारिस्थितिक विविधताओं और लोक संस्कृतियों को समेटे हुए है। सिक्किम से लेकर अरुणाचल तक और नागालैंड से लेकर त्रिपुरा तक, भारत के इन आठ राज्यों में लगभग दो सौ से अधिक जनजातियाँ निवास करती हैं। इनका हिंदी से परिचय भावात्मक कम, तार्किक ज्यादा है। मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूँ कि उत्तरी भारत, पश्चिमी भारत या दक्षिणी भारत में हिंदी से प्यार और घृणा के संबंध भावुकता केंद्रित अधिक हैं। 'मेरी मातृभाषा है, मेरी मातृभाषा नहीं है' वाला तर्क। पूर्वोत्तर में हिंदी को लेकर यह तर्क नहीं है। असमिया-बोडो से, बोडो - कार्बी से, कार्बी-मिसिंग से, मिसिंग न्यीशी से, मोनपा- सोनोवाल से, किस भाषा में संवाद करें? आपको यहाँ बैठे लगता होगा कि पूर्वोत्तर

के सातों-आठों राज्यों का मामला एक जैसा है जबकि आप वहाँ जाए तो पता चलता है कि वहाँ विपुल मात्रा में भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता है।

लुसाई हिल्स जो अब मिजोरम कहलाता है, में हिंदी 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटिश सेना के गोरखाली लोगों से पहुँची। आज वहाँ तीस प्रतिशत से अधिक लोग हिंदी बोलने, लिखने और समझने में रुचि रखते हैं। स्कूली स्तर पर छः सौ से अधिक प्राथमिक अध्यापक, आठ सौ पचास से अधिक माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक और पाँच सौ से अधिक उच्च माध्यमिक विद्यालय के अध्यापक हिंदी में हैं। एक सौ पचास से अधिक हिंदी सेवा संस्थाएँ हैं। मिजोरम विश्वविद्यालय में हिंदी का संपन्न विभाग है। मुझे एक प्रसंग याद आ रहा है-लेंगपुई हवाई अड्डे से बाहर निकला। प्रो. संजय जी ने गाड़ी भेज रखी थी। मिजो ड्राइवर था। गाड़ी में बैठते ही उसने 'क्या करते थे साजना, तुम हमसे दूर रहकर' बजाना शुरू कर दिया। मैंने पूछा-हिंदी जानते हो? उसने अंग्रेजी में उत्तर दिया- लिटिल बिट सर। इसका उल्लेख मैंने मिजोरम के हिंदी दिवस के कार्यक्रम में किया तो मिजोरम विश्वविद्यालय के उप-कुलपति ने कहा कि तीस साल पहले ऐसा नहीं था। प्रो. संजय जी ने नूरी और ललमोअना को मुझे आइजॉल घुमाने के लिए भेजा। मैंने नूरी से कहा- तुम्हारे पिताजी क्या करते हैं? नूरी ने कहा- वह बैंक में हैं। फिर मैंने पूछा- आप कैसे हिंदी में आ गई? नूरी ने बताया कि उसने स्नातक कॉमर्स में किया है। 'पिताजी ने कहा हिंदी पढ़ो, हिंदी में नौकरी है। हिंदी में नौकरी थी इसलिए हिंदी में आ गई'। ललमोअना ने हिंदी साहित्य में पीएच.डी. की है। मिजो हैं और उनके पिता सरकारी अधिकारी हैं। वह हिंदी में आए क्योंकि हिंदी में नौकरी है। इसलिए कह रहा हूँ कि पूर्वोत्तर के साथ हिंदी के संबंध को तार्किकता से समझा जा सकता है। यह भाषा पूर्वोत्तर के आपसी समुदायों के बीच और पूर्वोत्तर व शेष भारत के बीच एक संपर्क भाषा के रूप में विकसित हो रही है। साथ ही रोजगार की भाषा के रूप में भी विकसित हो रही है।

मेघालय में तो पांचवी, छठीं और सातवीं कक्षा में तो हिंदी अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाई जा रही है। नेहू (NEHU) में संपन्न हिंदी विभाग है। अरुणाचल प्रदेश जब नेफा था (नोर्थ ईस्ट फ्रंटियर एजेंसी) तभी से वहाँ के विद्यालयों में हिंदी अनिवार्य भाषा के रूप में पढ़ाई जाती थी। शुरुआती हिंदी शिक्षक तो बिहार और उत्तर प्रदेश के ही लोग थे। अब तो वहाँ अरुणाचल के ही स्थानीय युवक-युवतियाँ हिंदी शिक्षक हैं। पासी घाट में, बोमडिला में, तवांग में जय हिंद से अभिवादन करते हुए लोग मिल जाएँगे। अरुणाचल देश का एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ सामान्य अभिवादन में 'जय हिंद' बोला जाता है। पूर्वोत्तर की कई भाषाओं की लिपि देवनागरी हो चुकी है। अरुणाचल में मोनपा, मिजि व अकाकी भाषाओं की लिपि देवनागरी है। असम में मिरि, मिसिंग और बोडों की लिपि देवनागरी है। नागालैंड में अडागी, सेमा, रेग्मा, चाखे और नेपाली की लिपि देवनागरी है। सिक्किम में लेपचा, भडपाली और लिम्बू की लिपि देवनागरी है। सुनिए एक बात बताऊँ, आपको मणिपुर में विष्णुप्रिया समुदायों में जो रास-लीला आदि का मंचन होता है उसके अधिकतर संवाद भोजपुरी में बोले जाते हैं। है ना रोचक बात !

मणिपुर के मैतेयी वैष्णव हैं। वहाँ गुरु को ओझा कहते हैं और असम में लोकनाट्य है ओजापालि। बिहार के एक सज्जन हमारे ही जिले से थे शिवशंभु ओझा। लंबे समय तक असम में मंत्री रहे। लोग वोट देते थे कि ये गुरु ओझा हैं। चाहे नेतृत्व का मुद्दा हो या भाषा का मुद्दा हो- पूर्वोत्तर के लोग उदार रहे हैं। भरत

त्रिपाठी, शिवशंभु ओझा, त्रिवेणी प्रसाद, मतंग सिंह और मनमोहन सिंह जी असमिया समाज के नेता रहे हैं। एक अशोक सिंघल हैं। मूल रूप से हिंदी प्रदेश के रहने वाले हैं। उनके पूर्वज असम में व्यवसाय करने गए। तेजपुर में डेकिया जुलि विधानसभा क्षेत्र में भारी मतों से जीतते हैं। मैं यह उदाहरण इसलिए दे रहा हूँ कि पूर्वोत्तर का मन वैसा नहीं है जैसा आप अखबारों से समझते हैं। अखबार और अखबारी खबरों से अगर आप पूर्वोत्तर को समझेंगे तो एक गलत समझ होगी।

अप्रैल 1934ई. में महात्मा गांधी गुवाहाटी गए। अखिल भारतीय हरिजन सेवक संघ की स्थापना की। उन्होंने असमिया लोगों से कहा कि आपको हिंदी सीखनी चाहिए। 1936ई. में गुवाहाटी में अखिल भारतीय हिंदी प्रचार समिति की स्थापना हुई। एक बात बताऊँ? एक थे पंडित विशेश्वर दत्तशर्मा। वो सन् 1919ई. से ही डिब्रूगढ़ से 'प्रकाश' नामक हिंदी समाचार पत्र निकाला करते थे। अब तो पूर्वोत्तर भारत में पूर्वोत्तर प्रहरी, दैनिक पूर्वोदय, प्रातः खबर, दैनिक प्रेरणा भारती और सैन्टिनल जैसे हिंदी समाचार पत्र हजारों की संख्या में बिकते हैं।

असम के तीनसुकिया को तो दूसरे बिहार के रूप में जाना जाता है। असम और अरुणाचल प्रदेश की विधानसभा में तो हिंदी में सवाल पूछे जाते हैं। हिंदी असम की ब्रह्मपुत्र घाटी को बराक घाटी से जोड़ती है। असम में एक जिला है डिमाहसाऊ। वहाँ का शहर है हाफलांग। वहाँ हाफलांगी हिंदी बोली जाती है। दिमासा समुदाय के लोग इसे बोलते हैं। जैसे वह कहें- तुम कुत्ता हम खाया य तो इसका मतलब तुम्हारे कुत्ते ने हमें काट लिया (Your dog has bitten me.)। जैसे कोई कहे कि हम आगे गिरेगा तो आशय है Please drop me there. मुझे वहाँ छोड़ दो। मैं मजाक नहीं कर रहा हूँ। आप गूगल पर खोज कर देख लीजिए। मौका मिले तो हाफलांग जरूर जाइयेगा। असम का हिल स्टेशन है, धरती का स्वर्ग है।

अरुणाचल नागरी संस्थान, मणिपुर हिंदी परिषद्, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, पूर्वोत्तर साहित्य अकादमी, मिजोरम हिंदी प्रचार सभा जैसे कई संस्थान हिंदी के प्रचार-प्रसार में, शब्दकोश निर्माण में लगे हुए हैं। बाबा राघवदास, जमुना प्रसाद श्रीवास्तव, गोपीनाथ बरदलै, देवाकांत बरुआ का पूर्वोत्तर भारत में हिंदी के विकास में अविस्मरणीय योगदान है। कार्बी समुदाय में जनार्दन पाठक ने आजीवन भाषा तथा समाज के लिए कार्य किया। मणिपुर में पंडित छत्रध्वज शर्मा, कौशाम कुंज बिहारी, जयेंद्र शर्मा आदि का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। मेघालय में केशव शर्मा, विश्वनाथ, पद्मनाथ बरठाकुर, मिजोरम में चित्र महंत आदि हिंदी प्रचारकों के माध्यम से पूर्वोत्तर में हिंदी प्रचार-प्रसार का कार्य निरंतर आगे बढ़ा। असम में कृष्ण नारायण प्रसाद मागध, धर्मदेव तिवारी, अरुणाचल में नंदकिशोर पांडेय, ओकेन लेगो, अरुण कुमार पांडेय, नागालैंड में ब्रज बिहारी कुमार, त्रिपुरा में रमेंद्र कुमार पाल, शिलांग में दिनेश चौबे, हितेंद्र मिश्र, मिजोरम में सी. कामलोवा, संजय कुमार मिजो-हिंदी, कोकबरक-हिंदी, खासी हिंदी, न्यीशी हिंदी, लुसाई-हिंदी, नागामी- हिंदी के बीच संवाद के तंतु बने। मैं इन सभी को प्रणाम करता हूँ। दो नाम, जो बार-बार पूर्वोत्तर और हिंदी के संबंधों के उल्लेख होने पर आते हैं वे हैं- आदरणीय डॉ. कृष्णगोपाल जी और उत्तर कमलाबाडी सत्र, माजुली के सत्राधिकार आचार्य जनार्दनदेव गोस्वामी जी। भारत राष्ट्र के निर्माण में और हिंदी को सच्चे अर्थों में राष्ट्रभाषा बनाने में इन महानुभावों को देश याद रखेगा।

'भारतबोध' पत्रिका का यह अंक 'पूर्वोत्तर भारत और हिंदी' पर केंद्रित है। इस अंक में सर्वप्रथम 'भारत में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाया जाना चाहिए-सी. कामलोवा' शीर्षक में सी. कामलोवा जी का आशुतोष तिवारी द्वारा लिया हुआ साक्षात्कार है। सी. कामलोवा जी का मिजोरम में हिंदी प्रचार प्रसार में विशेष योगदान रहा है। भारत सरकार ने श्री सी. कामलोवा जी के इसी योगदान को रेखांकित करते हुए पद्मश्री से भी सम्मानित किया है। कामलोवा जी के इस साक्षात्कार के माध्यम से पूर्वोत्तर में हिंदी की विकास यात्रा तथा मिजोरम में हिंदी की स्थिति का पता चलता है। इस अंक का पहला लेख माधूर्ज्य कमल हजारिका कृत 'माजुली के हिंदी प्रचारक' है। इस लेख में माधूर्ज्य जी ने असम स्थित विश्व के सबसे बड़े नदी द्वीप माजुली में हिंदी के विकास के चरणों को स्पष्ट किया है। इस अंक का अगला लेख प्रो. संजय कुमार का है। प्रो. संजय कुमार ने अपने लेख 'मिजोरम में हिंदी के बढ़ते चरण' में मिजोरम में हिंदी के विकास का शोधपरक अध्ययन प्रस्तुत किया है। प्रो. लालचंद राम द्वारा लिखित 'पूर्वोत्तर भारत और हिंदी' में पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में हिंदी के विभिन्न पक्षों को विस्तार से बताया गया है। मुनीन्द्र मिश्र का लेख 'त्रिपुरा में हिंदी के प्रति बढ़ती आत्मियता' इस तथ्य की व्याख्या करता है कि हिंदी किस प्रकार त्रिपुरा में संवाद के साथ-साथ रोजगार की भी भाषा है। प्रो. हितेंद्र कुमार मिश्र द्वारा रचित लेख 'पूर्वोत्तर भारत का भाषाई परिदृश्य और हिंदी' में पूर्वोत्तर भारत की भाषाई विविधता बताते हुए हिंदी भाषा के महत्व को बताया गया है। डॉ.ई. विजय लक्ष्मी का लेख 'मणिपुर में हिंदी की स्थिति', छुकी लेप्चा का लेख 'सिक्किम में हिंदी शिक्षण', डॉ. अमिता मिश्रा का लेख 'त्रिपुरा राज्य की कला और भाषा', सुवास दीपक का लेख 'सिक्किम में हिंदी' पूर्वोत्तर के विभिन्न राज्यों में हिंदी की स्थिति को व्याख्यायित कर रहे हैं।

'भारतबोध' के इस अंक में डॉ. कालीचरण झा, डॉ. जाहिदुल दीवान, मीनाक्षी, सूर्यप्रकाश, अनंत मिश्र, डॉ. आर. के. मोबी सिंह के लेख संकलित हैं। इन सभी लेखों के द्वारा पूर्वोत्तर भारत और हिंदी के विविध संदर्भों का मूल्यांकन किया गया है। 'भारतबोध' का यह अंक पूर्वोत्तर भारत और हिंदी के रचनात्मक संबंधों के मूल्यांकन का एक ईमानदार प्रयास भर है। ऐसे और प्रयासों की आवश्यकता है। सभी विद्वान लेखकों का आभार जिन्होंने अपने महत्वपूर्ण लेखों से इस अंक को समृद्ध किया है। 'भारतबोध' के संपादकीय समूह, प्रकाशक और प्रकाशन कार्य से जुड़े हुए लोगों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

जय हिंद, जय हिंदी।

संपादक

आचार्य (डॉ.) चन्दन कुमार

कला संकाय, दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली-110007